डी-डॉलराइज़ेशन और भारत

प्रिलिम्स के लिये:

[BRICS+](), [डी-डॉलराइज़ेशन](), [केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्राएँ (CBDC)](), [बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट्स (BIS)](), [16वाँ कज़ान BRICS शिखर सम्मेलन 2024](), [क्रिप्टोकरेंसी](), [विनिमय दर](), [मुद्रा अवमूल्यन](), [ब्लॉकचेन भुगतान](), [UPI](), [RuPay](), [IMF](), [SDR](), [सॉवरेन वेल्थ फंड](), [G20]()

मेन्स के लिये:

डी-डॉलराइज़ेशन और भारतीय तथा वैश्विक अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव

स्रोत: बिज़नेस स्टैंडर्ड

चर्चा में क्यों?

हाल की **वित्तीय और मुद्रा पहलों**, विशेष रूप से **BRICS+ ढाँचे** के भीतर, के अंतर्गत अमेरिकी डॉलर-प्रधान प्रणाली पर निर्भरता को कम करने (**डी-डॉलराइज़ेशन**) और वैश्विक व्यापार तथा वित्त के लिये **वैकल्पिक तंत्र** स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है।

डी-डॉलराइज़ेशन

- यह वैश्विक व्यापार, वित्त और विदेशी मुद्रा आरक्षित निधियों में **अमेरिकी डॉलर के प्रभुत्व को कम करने** की प्रक्रिया को संदर्भित करता है।
- इसमें अंतर्राष्ट्रीय लेनदेन, कमोडिटी ट्रेडिंग (जैसे तेल) और विदेशी मुद्रा धारिताओं के लिये **अमेरिकी डॉलर** को अन्य मुद्राओं या परिसंपत्तियों (जैसे सोना, **क्रिप्टोकरेंसी या क्षेत्रीय मुद्राएँ**) के **साथ प्रतिस्थापित करना** शामिल है।

डी-डॉलराइज़ेशन संबंधी हाल की वित्तीय और मुद्रा पहलें कौन-सी हैं?

- **mBridge परियोजना:** यह सेंट्रल बैंक डिजिटल मुद्राओं (CBDC) के उपयोग पर आधारित एक **डिजिटल क्रॉस-बॉर्डर भुगतान** प्रणाली है। इसे शुरुआत में बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट्स (BIS) के समर्थन से **चीन, थाईलैंड** जैसे कई देशों के केंद्रीय बैंकों द्वारा बढ़ावा दिया गया था।
  - अनुमानों के अनुसार डॉलर के प्रभुत्व को बनाए रखने के लिये **अमेरिकी दबाव के कारण BIS mBridge से अलग हुआ।**
- **BRICS+ पहल: BRICS ब्रिज** और **BRICS क्लियर,** BRICS+ देशों में **भुगतान और समाशोधन प्रणाली** स्थापित करने के लिये **प्रस्तावित वित्तीय प्रणालियाँ** हैं।
  - BRICS+ समूह में मूल BRICS राष्ट्र अर्थात **ब्राज़ील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका** सहित नए सदस्य अर्थात **मिस्र, इथियोपिया, ईरान, संयुक्त अरब अमीरात** और **इंडोनेशिया** शामिल हैं।
- **पेट्रो-युआन बाज़ार: वैश्विक तेल व्यापार का 10.5%** और **वैश्विक तेल फ्यूचर्स (मानकीकृत संविदा) का 14.4% शंघाई इंटरनेशनल एनर्जी एक्सचेंज (2018)** द्वारा संपन्न होता है।
  - **सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात के गैर-डॉलर तेल व्यापार से मांग** में वृद्धि के कारण **पेट्रो-युआन** को बढ़ावा मिलता है और **अमेरिकी डॉलर** के एक स्थिर विकल्प के रूप में इसकी **विश्वसनीयता** बढ़ती है।
- **BRICS मुद्रा:** 16वें कज़ान BRICS शिखर सम्मेलन 2024 में, **"यूनिट"** नामक एक नई निपटान मुद्रा का उपयोग करने के लिये सिद्धांत रूप में एक समझौता हुआ, जो 40% सोने और सदस्य देशों की **60% स्थानीय मुद्राओं** द्वारा समर्थित है।

डी-डॉलराइज़ेशन के वैश्विक लाभ क्या हैं?

- **भू-राजनीतिक जोखिम में कमी:** देश **अमेरिका के उन प्रतिबंधों और विदेश नीति निर्णयों** से स्वयं को को सुरक्षित रख सकते हैं जिनसे डॉलर के

प्रभुत्व को बढ़ावा मिलता है (जैसे, **परिसंपत्तियों को फ्रीज़ करना** अथवा वैश्विक वित्तीय प्रणाली के अभिगम को प्रतिबंधित करना)।
    - उदाहरण के लिये, **वर्ष 2022** में यूक्रेन पर रूस के आक्रमण के बाद, पश्चिमी देशों ने रूस की **300 बिलियन अमेरिकी डॉलर** से अधिक की संपत्ति को कीलन कर लिया।
- **विविधीकरण:** डी-डॉलराइज़ेशन से **बहु-मुद्रा उपयोग** को बढ़ावा मिलता है, एक मुद्रा पर निर्भरता कम होती है और वैश्विक वित्त में संतुलन स्थापित होता है।
    - उदाहरण के लिये, वैकल्पिक भुगतान प्रणाली स्थापित किये जाने हेतु **पेट्रो-युआन और** भारतीय रुपए का उदय।
- **क्षेत्रीय मुद्राओं का सुदृढ़ीकरण:** देश **आर्थिक संप्रभुता** का सुदृढ़ीकरण करने और विनिमय दर **जोखिम** को कम करने के उद्देश्य से व्यापार में अपनी मुद्राओं को बढ़ावा दे सकते हैं।
    - उदाहरण के लिये, भारत संयुक्त अरब अमीरात के साथ रुपए में तेल का व्यापार करता है।
- **सुभेद्यता में सुधार:** डी-डॉलराइज़ेशन होने से देशों पर अमेरिकी मौद्रिक नीति (जैसे, **ब्याज दर में परिवर्तन)** से पड़ने वाला **प्रभाव कम होगा,** जिससे **पूंजी पलायन और** मुद्रा अवमूल्यन जैसे प्रभावों से संरक्षा मिलेगी।
- **सोने के उपयोग में वृद्धि:** डी-डॉलराइज़ेशन के कारण आरक्षित परिसंपत्ति के रूप में **सोने का उपयोग पुनः प्रचलित हो गया है,** जिससे यह वैध/कागज़ी मुद्राओं के लिये एक **स्थिर विकल्प** बन गया है।
- **डिजिटल मुद्राओं को बढ़ावा: डी-डॉलराइज़ेशन** से डिजिटल मुद्रा **और** ब्लॉकचेन भुगतान का विकास तेज़ी से होगा, जिससे वित्तीय नवाचार को बढ़ावा मिलेगा।
    - उदाहरण के लिये, चीन का डिजिटल युआन (e-CNY) और भारत का डिजिटल रुपया **(e₹)।**

वैश्विक डी-डॉलराइज़ेशन संबंधी चिंताएँ क्या हैं?

- **अल्पकालिक अस्थिरता:** मुद्रा आरक्षित निधियों अथवा व्यापार समझौतों में सहसा परिवर्तन होने से **वैश्विक बाज़ारों में अस्थिरता बढ़ सकती है**, क्योंकि वर्तमान में डॉलर **अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और वित्त का आधार** है।
- **विकल्पों की सीमित स्वीकृति:** कई वैकल्पिक मुद्राओं (जैसे, युआन, रुपया या रूबल) में **तरलता, स्थिरता और वैश्विक विश्वास का अभाव** होता है जो अमेरिकी डॉलर में है।
- **विखंडन का जोखिम:** डी-डॉलराइज़ेशन से **प्रतिस्पर्द्धी मुद्रा ब्लॉकों** का निर्माण हो सकता है, जिससे वैश्विक अर्थव्यवस्था **विखंडित** हो सकती है और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और निवेश जटिल हो सकता है।
- **भू-राजनीतिक तनाव:** अमेरिका डी-डॉलराइज़ेशन प्रयासों पर आक्रामक प्रतिक्रिया दे सकता है, जिससे व्यापार युद्ध, **प्रतिबंध या अन्य प्रकार की आर्थिक जवाबी कार्यवाही** बढ़ सकती है।
    - उदाहरण के लिये, डॉलर पर निर्भरता कम करने के प्रयास में BRICS देशों के लिये **अमेरिकी टैरिफ का खतरा।**
- **वैश्विक परिणाम:** डॉलर की आरक्षित स्थिति में गिरावट से **अमेरिकी ऋण की मांग कम हो सकती है,** और अमेरिका में आर्थिक अस्थिरता हो सकती है, जिसके **वैश्विक प्रभाव** हो सकते हैं, क्योंकि अमेरिका सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।
- **विनिमय दर निर्धारण की समस्या:** वैश्विक बेंचमार्क के रूप में अमेरिकी डॉलर के बिना, देशों को बहु-मुद्रा बास्केट जैसे विकल्पों का उपयोग करना होगा, जिससे विनिमय दरें जटिल हो जाएंगी।
    - उदाहरण के लिये, **भारत और रूस** लगातार अपनी स्थानीय मुद्राओं के आधार पर मुद्रा **विनिमय दर पर बातचीत** कर रहे हैं।

डी-डॉलराइज़ेशन पर भारत का दृष्टिकोण क्या है और इसका भारत पर क्या प्रभाव पड़ता है?

- **डी-डॉलराइज़ेशन पर भारत का दृष्टिकोण: भारत BRICS+ मुद्रा वार्ताओं** में शामिल है, तथा सतर्कता बरतते हुए कहा है कि उसका **अमेरिकी डॉलर को कमज़ोर करने का कोई इरादा नहीं है,** क्योंकि वह इसे वैश्विक स्थिरता के लिये **आवश्यक** मानता है।

लाभ

- **भारतीय रुपए को बढ़ावा देना:** यह **द्विपक्षीय और बहुपक्षीय व्यापार समझौतों** में भारतीय रुपए के उपयोग को प्रोत्साहित करता है। उदाहरण के लिये, तेल आयात के लिये भारत का रूस के साथ रुपए में व्यापार।
- **अधिक मौद्रिक नीति स्वायत्तता:** डॉलर पर निर्भरता कम करने से भारत को अमेरिकी नीतिगत बदलावों से प्रभावित हुए बिना, मुद्रास्फीति और ब्याज दरों को प्रबंधित करने के लिये **मौद्रिक नीति पर अधिक नियंत्रण** मिलता है।
- **रिज़र्व का विविधीकरण:** डी-डॉलराइज़ेशन से भारत को अपने **रिज़र्व** को अन्य मुद्राओं (जैसे, यूरो, येन, युआन) या स्वर्ण में विविधता लाने में मदद मिलती है, जिससे डॉलर के **अवमूल्यन का जोखिम कम** हो जाता है।
- **अमेरिकी प्रतिबंधों के प्रति जोखिम में कमी:** इससे **अमेरिकी प्रतिबंधों** के प्रति भारत की संवेदनशीलता **कम** हो जाती है तथा उसे अधिक भू-राजनीतिक लचीलापन प्राप्त होता है।
  - यह अमेरिका-केंद्रित [स्विफ्ट प्रणाली] **पर निर्भरता को कम करता है,** तथा भारत की वित्तीय प्रणाली को जोखिमों और प्रतिबंधों से बचाता है।

चिंताएँ

- **विदेशी निवेश पर प्रभाव:** डॉलर से दूर जाने से **विदेशी निवेशक हतोत्साहित** हो सकते हैं जो डॉलर-मूल्य वाली संपत्तियों की **स्थिरता और पूर्वानुमेयता** को पसंद करते हैं।
- **रिज़र्व में विविधता लाने में चुनौतियाँ:** वैकल्पिक मुद्राएँ या स्वर्ण जैसी परिसंपत्तियाँ भारत को **नए जोखिमों** के प्रति सुभेद्य बना सकती हैं, जैसे **मुद्रा मूल्यह्रास या वस्तुओं की कीमत में उतार-चढ़ाव।**
  - भारत के लिये **चीनी युआन पर अत्यधिक निर्भरता का जोखिम है,** जिससे भू-राजनीतिक और आर्थिक चुनौतियाँ सामने आ रही हैं।

- **धन प्रेषण पर प्रभाव:** डी-डॉलराइज़ेशन से **भारत में डॉलर में भेजी जाने वाली धनराशि बाधित** हो सकती है, जिससे लाखों परिवार प्रभावित होंगे।

भारत के लिये आगे क्या है?

- **रुपए को मज़बूत बनाना: भारत-UAE तेल व्यापार** की तरह रुपए में द्विपक्षीय व्यापार का विस्तार करना, साथ ही **करेंसी स्वैप** और ब्रिक्स+ पहल जैसे क्षेत्रीय ढाँचे को बढ़ावा देना।
    - सीमा पार लेनदेन के लिये UPI, RuPay **और डिजिटल रुपया (ई₹)** का अंतर्राष्ट्रीयकरण करना।
- **रिज़र्व में विविधता लाना: यूरो, येन, युआन, स्वर्ण और** IMF SDR में रिज़र्व **का विविधीकरण** करके अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता कम करना, साथ ही स्थिरता के लिये संप्रभु संपदा निधि (SWF) और कमोडिटी भंडार का विकास करना।
- **जोखिम प्रबंधन: बहु-मुद्रा व्यापार प्रणाली** को बनाए रखना, विविधतापूर्ण व्यापार के लिये आसियान, यूरोपीय संघ **और अफ्रीका** के साथ संबंधों को मज़बूत करना तथा रुपए में **निवेशकों का विश्वास** सुनिश्चित करना।
- **भारत की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करना: मुंबई को वैश्विक वित्तीय केंद्र के रूप में स्थापित करना,** बॉण्ड **बाज़ार में तरलता** को बढ़ावा देना, तथा **IMF,** G-20 और अन्य निकायों के माध्यम से बहु-मुद्रा प्रणाली की वकालत करना।

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न: डी-डॉलराइज़ेशन की अवधारणा और भारत की अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभाव पर चर्चा कीजिये।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा विगत वर्ष के प्रश्न

??????????

प्रश्न. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2019)

1. भारत का अधिकांश विदेशी ऋण सरकारी सत्त्वों के ऋणी होने के द्वारा है।
2. भारत का सारा विदेशी ऋण US डॉलर के मूल्यवर्ग में है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 व 2 दोनों
(d) न तो 1 न ही 2

उत्तर: (d)

प्रश्न. हाल ही में IMF के SDR बास्केट में निम्नलिखित में से किस मुद्रा को जोड़ने का प्रस्ताव दिया गया है?

(a) रूबल
(b) रैंड
(c) भारतीय रुपया
(d) रेनमिनबी

उत्तर: (d)

??????:

प्रश्न: विश्व व्यापार में संरक्षणवाद और मुद्रा चालबाजियों की हाल की परिघटनाएँ भारत की समष्टि आर्थिक स्थिरता को किस प्रकार से प्रभावित करेंगी? (वर्ष 2018)

प्रश्न: सोने के लिये भारतीयों के उन्माद ने हाल के वर्षों में सोने के आयात में प्रोत्कर्ष (उछाल) उत्पन्न कर दिया है और भुगतान-संतुलन और रुपए के बाह्य मूल्य पर दबाव डाला है। इसको देखते हुए, स्वर्ण मुद्रीकरण योजना के गुणों का परीक्षण कीजिये। (वर्ष 2015)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/de-dollarization-and-india